

महात्मा गांधी के विचारधारा का मूल सिद्धांत अहिंसा और सत्याग्रह, जिसे उन्होंने अपने जीवन में अमर में लाया। गांधी ने अहिंसा को शक्ति और सकारात्मक शक्ति माना और इसे एक समूह समाज की स्थापना के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा। उनका उद्देश्य था समाज में न्याय, समानता और सार्वभौमिक सृष्टि की जाति करना, और इसे वे सत्य और अहिंसा के माध्यम से ही संभव मानते थे।

गांधी ने अहिंसा को 'परम धर्म' और 'अपने आप को शक्तिशाली बनाने का एक माध्यम' बताया। उनका कहना था कि अहिंसा का अर्थ नहीं है केवल शरीरिक हिंसा से बचना, बल्कि विचारों और भावनाओं में भी अहिंसा का पालन करना है। उनका मानना था कि सत्य के पथ पर चलने के लिए अहिंसा आवश्यक है, क्योंकि यह एक सकारात्मक और सुखी शक्ति है, जो हमेशा हमेशाओं का समाधान कर सकती है।

गांधी ने सत्याग्रह को भी अहिंसात्मक अहिंसा और निरदोष सत्य की खोज में एक माध्यम के रूप में देखा; जिससे समाज को सुधारने में सहायक हो सकता है। सत्याग्रह का अर्थ है 'सत्य की प्रवृत्ति'।

अतः गांधी के विचारधारा में अहिंसा, अलम निर्मिता, और सार्वभौमिक सृष्टि की बुनियाद है। उन्होंने अपने जीवन में इस मूल सिद्धांत को अमर में लाकर एक सामर्थ्यशाली और सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा दी। उन्होंने दुनिया को एक नए दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रेरित किया।

Dr. Umesh Kumar Rai
 Dept. of History
 S.B. College, Ara
 M.A. (SEM-3), Session: 2021-23
 22.02.2024
 Class- 01 (only)
 Mob: 8809947478
 Email Id:
 ukrai.sasaram@gmail.com